Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

लोके वेदे च (कुमाऊनी शकुनाखर गीतों के सन्दर्भ में)

डा॔0 मीनू जोशी
"प्रयाग-सदन"
तल्ला दनिया अल्मोड़ा
minujoshi12@gmail.com

सारांश
प्रस्तुत लेख में लोक और वेद के गहन संबंध को कुमाऊँनी शकुनाखर गीतों के संदर्भ में स्पष्ट किया गया है। भारतीय संस्कृति में वेद ज्ञान के मूल स्त्रोत हैं और हमारे धार्मिक अनुष्ठान संस्कार तथा सामाजिक परम्परांए इन्हीं पर आधरित हैं। हिन्दू धर्म के षोडश संस्कारों में वैदिक मंत्रों का विशेष महत्व है।
कुमाऊं क्षेत्र में इन संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीत वैदिक मंत्रों के समानान्तर चलते हैं। जहां एक ओर आचार्य वैदिक मंत्रोचार करते हैं, वहीं दूसरी ओर महिलाएं उसी अनुष्ठान से संबंधित लोकगीत गाती हैं। इस प्रकार लोक और वेद का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।
शकुनाखर, गणेश–पूजन, नामकरण, विवाह जैसे संस्कार गीत वैदिक भावभूमि से प्रेरित हैं। ये गीत लोकभाषा लोकभावना और सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक हैं। इन्हें वैदिक मंत्रों का लोकानुकूल रूप भी कहा जा सकता है।
अतः लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। उन्होने वैदिक परम्पराओं को जनसामान्य तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके संरक्षण और संवर्धन से हमारी सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रह सकती है।

मुख्य शब्दः– लोक, वेद, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, वैदिक संस्कति, लोकगीत, षोडश संस्कार, वैदिक मंत्र।

प्रस्तावना :–

समाज में विभिन्न जाति धर्म के लोग रहते हैं। जिनकी अपनी मान्यताएं व रीति रिवाज हैं। हिन्दु धर्म में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। धार्मिक व मांगलिक क्रिया–कलाप निर्धारित रीति के अनुसार होते हैं।
हिन्दु धर्म में बालक के जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों का विधान है। हिन्दुओं द्वारा वैदिक ऋचाओं के आधार पर धार्मिक अनुष्ठान किये जाते हैं। मेरा मुख्य उद्देश्य यह है कि प्राचीन काल से चली आ रही षोडश संस्कारों की प्रक्रिया में तत्समय गाये जाने वाले

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

लोक–गीतों की समानता को दर्शाना जो कि मुख्यतः उन महिलाओं द्वारा गाये जाते हैं जिनकी विद्यालयी शिक्षा शून्य रही हैं। षोडश संस्कारों के जिन विधान का वैदिक मंत्रोच्चार हो रहा होता है, उन महिलाओं द्वारा उसी विधि के समान्तर वह लोक गीत गाया जाता है।

वेदों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। वेद शब्द संस्कृत के **"विद्"** धातु से बना है। इस तरह वेद का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान के ग्रन्थ" हैं। वेदों को ही "श्रुति" नाम से भी पुकारा जाता है। गुरूमुख द्वारा शिष्यगण वेदों को सुनकर याद किया करते थे। श्रवण किये जाने के कारण इनका नाम श्रुति पड़ गया। इन वेदों की संख्या चार हैं –

1. ऋगवेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथवर्वेद

वेद केवल भारतीय संस्कृति के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति के आधार हैं। मानव जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नही है, जिसके उन्नयन के साधन वेद में निर्दिष्ट नहीं हैं। वस्तुतः लौकिक उपायों द्वारा जो ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता उसकी प्राप्ति का एक मात्र साधन वेद ही हैं। "राम दास गौड़ ने (हिन्दुत्व) में वेदों का परिचय देते हुए वैदिक साहित्य को चार भागों में विभक्त किया है।

1. संहिता 2. ब्राह्मण ग्रन्थ 3. आरण्यक 4.उपनिषद

संहिता भाग– सूक्तों एवं मंत्रों के संकलन को संहिता कहते हैं, जो वेद के नाम से जाने जाते हैं। ऋषियों के अनुभवों के संग्रह ही वेद हैं जिन्हैं संहिता कहा गया। वेदों की ये संहिताएं चार वेदों के नाम से प्रसिद्ध हुयीं –

1. ऋगवेद संहिता 2. यजुर्वेद संहिता 3. सामवेद संहिता 4. अथर्ववेद संहिता

ब्राह्मण ग्रन्थ–वेदों के पश्चात् प्रत्येक संहिता भाग के साथ उसके विधि निर्देशक ब्राह्मण ग्रंथ आते हैं। ये वेद की व्याख्या से संबंध रखते हैं तथा कर्मकाण्ड के धारक हैं।

अरण्यक–संहिता भाग के प्रधान ब्राह्मण ग्रन्थों का शेष अंश ही आरण्यक है। ये ग्रन्थ ज्ञान काण्ड के वाहक कहे जाते हैं।

उपनिषद–उपनिषद आध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार हैं। इनमें भावना की सबलता के कारण ही ज्ञान की प्रधानता है। अतः ये ज्ञानात्मक है। इनकी संख्या 108 मानी गयी है। किन्तु वर्तमान में 10 उपनिषद प्रसिद्धि प्राप्त हैं।" 1

हमारे हिन्दू धर्म में वेदों को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वेदों में लिखे मंत्रो के आधार पर ही हमारे विभिन्न रीति–रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञादि संपन्न होते हैं। वैदिक रीतियां हमारे सामाजिक वातावरण के अनुसार थोड़ी–थोड़ी विभिन्नता लिए होती है जिनमें हमारी लोक संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

लोक परम्पर हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है।`लोक` शब्द अत्यन्त प्राचीन है। ऋगवेद में लोक के लिए`जन` शब्द का प्रयोग जीव तथा स्थान दोनों अर्थों में लिया जाता है। डॉ

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार, "आधुनिक सभ्यता से दूर अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली तथा कथित अशिक्षित एवं अनिस्कृत जनता को लोक कहते हैं, जिनका आचार–विचार और जीवन परम्परा से युक्त होता है"। 2 अतः स्पष्ट है कि, वे लोग जो संस्कृ त निष्ठ पंडितो तथा परिष्कृत लोगों के प्रभाव से दूर हुए अपनी पुरातन स्थिति में वर्तमान है। इन्हें लोक की संज्ञा दी जाती है इन्हीं लोगों के साहित्य को लोक साहित्य कहा जाता है। यह संहिता प्रायः मौखिक होता है तथा परंपरागत रूप में चला आता है।

"जिस प्रकार वैदिक साहित्य की वर्णन, शैली, भाषा और विषय मानव के दैनंदिन जीवन से अधिक संबंधित होते हैं। उसी प्रकार की स्थिति इन लोकगीतों तथा गानों की भाषा उतनी ही सुबोध एवं अलंकृत होती है। जितनी की वैदिक ऋषियों के लिए वैदिक भाषा रही होगी, जिस प्रकार वैदिक वर्णनों में अनेक स्थानों पर पद्य के साथ गद्य का भी प्रयोग देखा जाता है। उसी प्रकार लोक साहित्य में विशेषकर गाथा गीतों में भी अपने प्रसंगो में गीतों के साथ गद्य का भी योग पाया जाता है। इस दृष्टि से इन्हें जनता का वेद कहा जाना उपयुक्त भी कहा जायेगा।" 3

उत्तराखण्ड में कुमाऊनी व गढ़वाली लोकगीतों की परम्परा बहुत पुरानी है। कुमाऊनी लोक गीत मध्य हिमालय के नैनीताल, अल्मोड़ा पिथौरागढ़ आदि स्थानों में रहने वाली पर्वतीय जातियों के गीत है इन गीतों को दो भागों में बांटा जा सकता है।

पहले वो संस्कार गीत जो नारियों द्वारा पुत्र जन्म, नामकरण, यज्ञोपवीत एवं विवाह के समय गाए जाते हैं तथा दूसरे मेलों त्योहार और ऋतुओं के लोकगीत।"कुमाऊनी स्त्री समाज में प्रचलित संस्कार गीत हिंदू धर्म के षोडश संस्कारों से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। ये अनिवार्य तथा विशेष गीत दो प्रकार के होते हैं अनिवार्य गीत प्रत्येक संस्कार के आरंभ में गाए जाते हैं दूसरे प्रकार के गीत संस्कार विशेष के साथ जो जुड़े हैं।" 4

षोडश संस्कार करवाने हेतु जहां एक और पंडित वेद आचार्य वैदिक मंत्रोच्चार कर यजमान के वहां धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, वहीं दूसरी ओर महिलाओं द्वारा कर्मकांडों से संबंधित लोकगीतों को गया जाता है। इन लोकगीतों में वैदिक प्रीति का समन्वय परिलक्षित होता है, जिसका प्रारंभ धरती–आकाश–पाताल के सभी देवी देवताओं के वंदन से होता है। सर्वप्रथम गणेश–पूजा, मातृ–पूजा, कलश–स्थापना, आमंत्रण आदि गीतों को गया जाता है। जो वैदिक युग से आज तक की धार्मिक परंपराओं /मान्यताओं के सामाजिक साक्ष्य हैं।

अतः यह कहना अनुचित न होगा कि हमारे वैदिक मंत्रो के आधार पर ही हमारे लोक गीतों की रचना हुयी है। लोक गीत तो एक गीत ही है, उसे किसी भी समय गाया जा सकता है। परन्तु ऐसा नहीं है। जिए संस्कार का वैदिक मंत्रोच्चार होता है, उसी के सापेक्ष हमारे लोकगीतों का भी सार होता है। मांगलिक कार्य के आरम्भ में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ गणेश

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वंदना की जाती है, वहीं वेदी के समीप बैठी कुमाऊंनी महिलाओं द्वारा गणेश वन्दना का लोकगीत गाया जाता है। शिशु जन्म से षष्ठी पूजन, नामकरण, विवाह आदि संस्कारों में पंडितो द्वारा वैदिक रीति से मंत्र पाठ किया जाता है। हमारे लोकगीतों में उसी संस्कार से सम्बंधित लोकगीत गाया जाता है। गोया लोकगीत उस संस्कार से सम्बधित मंत्रो का कुमाऊंनी अनुवाद हो।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत है, जिससे स्पष्ट होता है कि हमारे वैदिक वैदिक मंत्रो के सापेक्ष ही हमारे लोकगीतों का भी जन्म हुआ है, जैसे–

1. **शकुनाक्षर–** शकुनाखर कुर्मानचलीय संस्कृत में हर शुभ कार्य में गाए जाते हैं जो मंगल कामना का प्रतीक है।

वैदिक मंत्र – सुमुखश्चैकदन्तस्च कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरस्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ..... ।

(जिनके सुन्दर मुख हैं, एक दन्त हैं, जो गौर वर्ण के हैं तथा जो हाथी के कान वाले हैं ऐसे लम्बोदर भगवान गणेश, विघ्न का नाश करने वाले विनायक गणेश हैं।)

लोकगीत– शकुना दे, शकुना दे, सर्व सिद्धि काज ए, अति नीको, शुभ रंगीलो दायनी, बाजनी, शंख शबद दैवी ताल,..... ।

(यह अति शुभ मंगल कार्य है, अतः मंगल गीत गाओ, शंख घंट की शुभ ध्वनी के साथ..... ...।)

2. **निमंत्रण–** भावनाओं के रिश्ते में रचा आमंत्रण जो देवता प्रकृति के समस्त उपादान, स्वजनों के साथ–साथ सभी वर्ग के उन सभी लोगों को आमंत्रित करता है, जो किसी न किसी रूप में सहयोगी बनकर आते हैं।

वैदिक मंत्र– ऊॅ गणनां त्वा गणपति, हवामहे प्रियाणां त्वा प्रजापति, हवामहे निधिनां त्वा निधि पति..... ।

(हे समस्त गणों के स्वामी, संसार के पालक, अखिल निधियों के रक्षक, गणपति आपका हम आह्वान करते हैं..... ।)

लोकगीत– प्रातः जो न्यूतू मैं सूरज, सांझ जो न्यूतू मैं चन्द्रमा, किरणन को अधिकार, तारन को अधिकार, जूनिन को अधिकार, पंच बधायें न्यूतिए, आज बधाये न्यूतिए..... ।

(आज इस मंगल अवसर पर हम बधाई हेतु सबको आमंत्रित करते हैं, प्रातः की बेला में सूरज को उसकी रश्मियों के साथ व संध्या में चंद्रमा को तारों के साथ..... ।)

3. गणेश पूजन–हिंदू संस्कृति में सभी मांगलिक लौकिक एवं वैदिक परंपराओं में सिद्धि के दाता विघ्न विनाशक के रूप में सर्वप्रथम गणेश की पूजा की जाती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वैदिक मंत्र-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियायए लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय!
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषितायए गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते!!
(हे विघ्नों की हरने वाले वर देने वाले देवताओं के प्रिय, लम्बे उधर वाले, कलाओं से परिपूर्ण संसार का भला करने वाले, हाथी के मुख वाले, वेद और यज्ञ से सुशोभित माता पार्वती के पुत्र आपको बार–बार नमस्कार है।)

लोकगीत– जय–जय गणपति लगन सों बेर, आरंभ रचियल सिद्धिविनायक ए, एकदंत सूप कर्ण, गवरी के नंदन, मूसा के वाहन, सिंदूरी सोहे.....।
(हे गणपति आपको प्रणाम आप सृष्टि के रचयिता, सिद्धि के दाता, एक दांत वाले, बड़े कानों वाले, गौरी के पुत्र आपको प्रणाम है.....।)

4.कलश स्थापना – पूजा में कलश स्थापना का विशेष महत्व है। जिन–जिन उपकरणों से कलश की स्थापना की जाती है उन्हें बतलाते हुए पावन धरती में धर्म का कलश स्थापित करने की परंपराओं का उल्लेख लोकगीत में भी किया जाता है।

वैदिक मंत्र-

ऊँ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
(कलश के मुख में भगवान विष्णु, कण्ठ में शिव और मूल आधार में ब्रह्मा स्थित है कलश के मध्य में सभी मातृगण शक्तियां विराजमान है.....।)

लोकगीत– धरती–धरम लै कलश थापिले, सोवरन माटी लै कलश थापिले, तांबा कुम्भ लै कलश थापिले, कोरी गगरी लै कलश थापिले, गंगा यमुना का नीर लै कलश थापिले, चतुर्मुखी ब्रह्मा लै कलश थापिले.....।
(धरती को लीप कर उसमें तांबे के कलश में गंगा यमुना नदी का जल भरकर चार मुख वाले ब्रह्मा जी आदि देवताओं का आह्वान कर कलश स्थापना करी है.....।)

5.षष्ठी पूजन– षष्ठी पूजन में सिद्धि योगिनी देवी की पूजा बच्चों की दीर्घायु एवं उनके भरण पोषण के लिए की जाती ह। यह महोत्सव बच्चों की जन्म से छठे दिन होता है।

वैदिक मंत्र– ऊँ षष्ठी देवी! नमस्तुभ्यम, ऊँ आयाहि वरदे देवी! षष्ठी देवीति विश्रुता, शक्तिभि सहपुत्र मे रक्ष–रक्ष वरानने।
(हे षष्ठी देवी आपको प्रणाम है, पुत्र वरदान देने वाली शक्ति दायिनी, षष्ठी मैया आपको बार–बार प्रणाम हैं.....।)

लोकगीत– आहो छठी, छटा दिन, दस मास हमरा घर आहो छटी सुही सांझ मैले तील को तेल, दिया सुही सांझ मैले कापुर सारी बाती.....।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

(हे षष्ठी मैया हमारे घर पधारो मैंने तिल के तेल का दिया जलाया है, आप मेरे घर पधार कर वर दो..... ।)

6.नामकरण–जन्म के 11 वें दिन बच्चे की व्यक्तिगत पहचान एवं बाहरी वातावरण से साक्षातकार वैदिक पूजा विधान से सूर्य दर्शन करवाया जाता है।

वैदिक मंत्र– ऊँ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न्मृतं मृत्यं च, हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यनः–

(सूर्य देव अपने सुनहरे रथ पर सवार हो कर अज्ञानता स्वरूप अंधकार को हटा कर ब्राह्मण को प्रकाशित करने वाले है। सूर्य देव सम्पूर्ण लोक में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।)

लोकगीत– सूरज किरण उदय भैन, बालो माई हरषि भैन खोलि दे पौड़िया, पौड़ी किवाड़ हमले जाड़ों छ सूरज–जु घर।

(सूर्य किरण से उजाला हो गया है, जिसे देख बालक की माता अति प्रसन्न है और अपने घर के किवाड़ खोलने का आग्रह करती है।)

7.विवाह– सोलह संस्कारों में प्रमुख होता है विवाह संस्कार जिनमें भिन्न–भिन्न रीति रिवाज, पूजा–विधान होते हैं।

वैदिक मंत्र– मंगलम् भगवान विष्णु र्मंगलम् गरूड़ध्वजः
मंगलम् पुण्डरीकाक्ष मंगलायतनो हरिः।

(मंगल करने वाले हे भगवान विष्णु, जिन्हौंने गरूड़ को अपना ध्वज बनाया है। जिनकी नेत्र कमल समान है। वे हरि मेरे कार्य को मंगलमय करें।)

लोकगीत– सुवा रे सुवा बनपन्छि सुवा, बनखण्डी सुवा, दे सुवा नगरी न्यूत दिया।

(वन पक्षी शुक (तोते) से मंगल कार्य हेतु नगर भर में आमंत्रण देने की विनती की है।)

इसी प्रकार वैदिक मंत्रों के साथ–साथ विभिन्न पूजा–विधानों से सम्बन्धित लोक गीत गाये जाते है। जैसे– यज्ञोपवीत, मुण्डन, मातृपूजन, नवग्रह पूजा, अग्निस्थापना, आबदेव, (पितृपूजन) आदि एसे विभिन्न संस्कार हैं जिनमें वैदिक मंत्रों के सापेक्ष हमारे कुमाऊंनी लोक गीतों की रचना हुई है। लोक गीतों के समान्तर हमारे वैदिक मंत्र हैं जिस मंत्र का उच्चारण होता है लोकगीत के बोल मंत्र के सापेक्ष होते हैं।

जिस प्रकार विवाह में प्रयुक्त मंत्र नामकरण संस्कार में प्रयोग नहीं होता ठीक उसी प्रकार विवाह गीत नामकरण में नहीं गाया जाता।

प्रत्येक संस्कार का अपना एक गीत होता है जो ठीक उसी अवसर पर गाया जाता है जो धार्मिक अनुष्ठान हो रहा है। किन्तु समय परिवर्तन के साथ–साथ संस्कारों को संक्षिप्त रूप में किया जाने लगा है, जिनसे हमारी लोक परम्परा व मान्यताओं में शहरीकरण के साथ परिवर्तन हो रहा है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

लोकगीत का गायन प्रायः उन महिलाओं द्वारा किया जाता था जिनकी विद्यालयी शिक्षा कम अथवा शून्य रही है। वेदों काज्ञान न होने पर भी कैसे हमारे लोक साहित्य के समान ही हमारे लोक गीतों का निर्माण हुआ है। स्पष्ठ रूप से देखा जा सकता है कि वैदिक मंत्रों व हमारे लोकगीतों की समानता को कैसे एक अज्ञानी समुदाय ने लोक साहित्य की रचना करी जिसकी समानता वेदों से मिलती है।

सरकार द्वारा इनके भरण–पोषण व संरक्षण कर अनेकों मुहिम चलायी गई हैं जो कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पूर्वरूप में तो नहीं पर परिवर्तित रूप में जरूर संरक्षित रहेगी।

सन्दर्भ सूची–

1. रामदास गौड़, हिन्दुत्व काशी, 1994, शिव प्रसाद गुप्त, सेवा उपवन, पृ0सं0–34
2. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन इलाहाबाद पृ0सं0– 11
3. डी0डी0 शर्मा, उत्तराखण्ड के लोक साहित्य का आयामी परिदृश्य, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, पृ0सं0–119

आधार ग्रन्थ–

1. पं0 लालबिहारी मिश्र, नित्यकर्म–पूजा प्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर।
2. सरोज उपाध्याय, शकुनादे, कुमाऊँ के संस्कार गीत (लोकगीत), धाद प्रकाशन, देहरादून।
3. दिवा भट्ट, उत्तराखण्ड की लोक साहित्य परम्परा, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो।